आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 8 • अंक-2266 • उदयपुर, सोमवार 08 मार्च, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

ब्लैक होल, ऊर्जा के स्रोत

ध्यान रहे कि ब्लैक होल अंतरिक्ष का वह क्षेत्र है, जहां गुरुत्वाकर्षण खिंचाव इतना तगड़ा होता है कि इसमें से कोई चीज बाहर नहीं जा सकती। बड़े तारे के मध्य भाग के ढहने से ब्लैक होल बनते हैं। कुछ ब्लैक होल्स का द्रव्यमान सूरज से अरबों गुणा अधिक होता है। ये दैत्याकार ब्लैक होल बनते कैसे हैं, यह अभी कोई नहीं जानता।

हालांकि ब्लैक होल असीमित और अनंत ऊर्जा के स्रोत भी हैं। सवाल है कि क्या कभी मनुष्य भी इस अनंत ऊर्जा का दोहन कर पाएगा? सबसे नजदीकी ब्लैक होल करीब 1000 प्रकाश वर्ष दूर है। वहां तक पहुंचना नामुमकिन है। यदि खगोलविद् इन ब्लैक होल्स से ऊर्जा निकलने का कोई तरीका खोज लें तो ये तकनीकी रूप से उन्नत सभ्यता के लिए असीमित ऊर्जा के स्रोत बन सकते हैं। न्यूयॉर्क स्थित कोलंबिया यूनिवसिटी के खगोलविद् और इस अध्ययन के सह–लेखक लुका कमिसो ने कहा कि हमारा अगला लक्ष्य यह पता लगाना है कि किसी ब्लैक होल से जानबूझकर ऊर्जा निकालने की प्रक्रिया दूरवर्ती पर्यवेक्षकों को कैसे दिखेगी। इससे मनुष्य को दूरवर्ती पारलौकिक सभ्यताओं का पता लगाने में मदद मिल सकती है। इस अध्ययन के मुताबिक ब्लैक होल से ऊर्जा के चिह्न उस वक्त निकलते हैं जब बल विपरीत दिशाओं में खिंचता है। उस समय प्रचंड ऊर्जा निकलती है।

विज्ञानियों का कहना है कि ब्लैक होल प्लाज्मा ऊर्जा कणों के गर्म सूप से घिरा होता है। इनमें चुंबकीय क्षेत्र होता है। एक थ्योरी यह कहती है कि जब चुंबकीय क्षेत्र की लाइनें सही तरीके से जुड़ती और अलग होती हैं तब वे प्लाज्मा कणों को गति देकर 'निगेटिव एनर्जी' उत्पन्न करती हैं। इस प्रकार ब्लैक होल से बड़ी मात्रा में ऊर्जा निकाली जा सकती है। इस नए अध्ययन से विज्ञानियों को विभिन्न किस्म के ब्लैक होल्स के रहस्यों को उजागर करने में

देश के 18 शहरों में विकसित किए जाएंगे वन क्षेत्र

वायु प्रदूषण के संकट से जूझ रहे देश के प्रमुख शहरों में कंक्रीट के जंगल के साथ अब हरे–भरे वन क्षेत्र भी विकसित किए जाएंगे। पर्यावरण मंत्रालय ने पहले चरण में आगरा, भोपाल सहित देश के बारह राज्यों के 18 शहरों में सिटी फोरेस्ट को विकसित करने की योजना को मंजूरी दी है। सिटी फोरेस्ट कम से कम 10 हेक्टेयर और अधिकतम 50 हेक्टेयर क्षेत्र में विकसित किए जाएंगे। इनके विकास के लिए सभी शहरों को दो करोड़ रुपये की मदद भी दी जाएगी। जो बाड़ लगाने सहित पौधों के रख–रखाव और प्रशासनिक लागत आदि पर खर्च होगा।

दो सौ वन क्षेत्र विकसित करने की योजना

पर्यावरण मंत्रालय ने वर्ष 2024 तक सभी प्रमुख शहरों में ऐसे दो सौ वन क्षेत्र विकसित करने की योजना बनाई है। इस पर 415 करोड़ रुपये खर्च होंगे। मंत्रालय ने पिछले साल इसकी घोषणा के साथ ही सभी राज्यों से इस संबंध में प्रस्ताव भी मांगे थे। ज्यादातर शहरों ने इस योजना में रूचि दिखाई थी, लेकिन तय मानकों के तहत इनके पास भूमि उपलब्ध न होने के चलते पहले चरण में सिर्फ 18 शहरों के ही प्रोजेक्ट को मंजूरी मिल सकी है।

अवैध कब्जे से बचाई जा सकेगी सरकारी जमीन

माना जा रहा है कि इससे जहां वन क्षेत्रों में बढ़ोतरी होगी, वहीं खाली पड़ी सरकारी भूमि को अवैध कब्जे से भी बचाया जा सकेगा। साथ ही शहरी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को स्वच्छ और सुंदर पर्यावरण भी मिलेगा।

पहले चरण में शामिल शहर

पर्यावरण मंत्रालय ने हाल ही में संसद को बताया था कि किन–किन शहरों में पहले चरण में वन क्षेत्र विकसित किए जाएंगे। इनमें आगरा, भोपाल, ग्वालियर, गया, रांची, हरिद्वार, देहरादून, पठानकोट, तुमकुर, बेंगलुरु, भुवनेश्वर, संबलपुर, कोटा, नागपुर, यवतमाल, चेन्नई, सूरत और गांधीनगर शामिल हैं।

सेवा–जगत्
सेवा पथ पर आपका नारायण सेवा संस्थान

संस्थान द्वारा फिरोजाबाद में कृत्रिम अंग एवं राशन वितरण

नारायण सेवा संस्थान द्वारा फिरोजाबाद क्लब बाईपास रोड़ फिरोजाबाद में कृत्रिम अंग माप शिविर सम्पन्न हुआ, शिविर में 30 दिव्यांगों भाई–बहनों के कृत्रिम हाथ–पैर माप लिया गया, 31 गरीब परिवारों को राशन वितरण किया गया, शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् नानकचंद जी अग्रवाल, विशिष्ट अतिथि श्रीमान् मनीष कुमार जी अग्रवाल, श्री शंकर जी गुप्ता, श्री कपिल जी बंसल, श्रीमान् शारदा जी गुप्ता आदि कई मेहमानगण उपस्थित थे।

शिविर में दिव्यांगों के साथ आए परिजनों के चेहरे पर एक अलग खुशी देखने को मिली। शिविर प्रभारी अखिलेश जी, श्रीनाथु सिंह जी ने अपनी सेवाएं दीं।

संस्थान द्वारा मथुरा में 104 गरीब परिवारों को राशन वितरण

नारायण सेवा संस्थान द्वारा असहाय, दिव्यांग व कोरोना के चलते बेरोजगार हुए गरीब कामगारों को राशन वितरण किया। संस्थान मुख्यालय उदयपुर के तत्वावधान में विभिन्न आदिवासी क्षेत्रों में तथा देशभर के विभिन्न शाखाओं द्वारा निःशुल्क राशन किट वितरण कर रहे हैं।

50000 परिवारों को राशन निःशुल्क दिया जाने का संकल्प है। इसके तहत् रेजेन्सी गार्डन मथुरा में हुए, शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् सुनिल जी कुमार गोयल, श्रीमान् मोहित जी शर्मा, श्री दिलीप जी वर्मा, श्री विष्णु जी तिवारी कई गणमान्य मेहमान उपस्थित थे। प्रत्येक किट में 15 किलो आटा, 2 किलो दाल, 5 किलो चावल, 2 किलो तेल, 4 किलो शक्कर, 1 किलो नमक सहित आवश्यक सामग्री है।

शिविर टीम में उमेश बिहारी जी, श्रीनवनीत सिंह जी, रविन्द्र जी आमेटा आदि ने सेवाएं दी।

समाज पैदा करे समान अवसर, तभी आगे बढ़ेंगे पैराएथलीट

पैराएथलीट्स को समान्य खिलाड़ियों जैसी पहचान मिले, इसकी जिम्मेदारी पूरे समाज की है। दिव्यांगों के लिए किया गया कोई भी काम समाज चैरिटी के अंतर्गत लेता है, लेकिन उसे समान अवसर के तहत लाने की जरूरत है जबकि कानून समान अवसर की बात करता है। हमारे लिए बस मौकों में थोड़े बदलाव की ही जरूरत होती है। इस बदलाव के साथ दिव्यांग और पैराएथलीट्स भी वही ऊंचाई हासिल कर सकते हैं, जो सामान्य खिलाड़ी या व्यक्ति। कमी समाज की सोच में है। वह दिव्यांगों के लिए समान अवसर पैदा नही करता। समाज का संवेदनशील होना जरूरी है, न कि दयावान होना। समाज के इस 12 फीसदी हिस्से को पीछे नहीं छोड़ा जा सकता।

खेल परिसरों में भी बदलाव जरूरी

दिव्यांग खिलाड़ियों के लिए मूलभूत सुविधाओं का अभाव है। कितने गांव या शहर ऐसे है, जहां दिव्यांग खिलाड़ी खेलने जा सकते है? हमें हर परिसर मे बदलाव करना होगा।

सिलेबस में लाना होगा

कोर्स की किताबों में सामान्य खिलाड़ियों के बारे में बहुत कुछ है लेकिन पैराएथलीट्स की बात ही नहीं होती। कोर्स की किताबों में ऐसे खिलाड़ियों के बारे में चैप्टर्स होने चाहिए। बचपन से स्कूल के लेवल पर भी दिव्यांग खिलाड़ियों को साथ खिलाया जाएगा तो समाज भी उठकर आएगा।

दिव्यांग को भी होना जागरूक

जब तक दिव्यांग भी अपने अधिकारों की मांग नहीं करेंगे, तब तक बदलाव थोड़ा मुश्किल है। उन्हें अपने सभी अधिकारों के बारें में जागरूक होने की जरूरत है। उन्हें चीजों के बारें में सवाल उठाना होगा। इसके साथ यह भी जरूरी है कि दिव्यांगों को पॉलिसी मेकिंग का हिस्सा बनाया जाए। खिलाड़ियों को आगे बढ़ाने के लिए जरूरी है कि संसद तक दिव्यांगों की पहुंच बने।

सफलता मिलती ही है

भगवान श्रीकृष्ण का ये स्वभाव था कि वे किसी भी स्थिति में हार नहीं मानते थे। लगातार कोशिश करते रहना, उनकी विशेषता थी। एक बार बालक कृष्ण और बलराम ग्वालों के साथ जंगल में खेल रहे थे। खेलते–खेलते वे काफी दूर चले गए। सभी ग्वालों को थकान होने लगी, उन्हें भूख–प्यास भी लग रही थी।

कृष्ण सभी साथियों की परेशानी समझ गए। उन्होंने ग्वालों से कहा, यहीं पास में कुछ ब्राह्मण अपने परिवार के साथ यज्ञ कर रहे हैं। वहां भोजन भी बना होगा। तुम सब वहां जाओ और महिलाओं को अपनी परेशानी बताकर खाना मांग लेना।

कृष्ण की बात मानकर सभी ग्वाले ब्राह्मणों के यज्ञ स्थल पर पहुंच गए। वहां उन्होंने खाना मांगा तो उन्हें मना कर दिया गया। ग्वाले निराश होकर लौट आए और कृष्ण को पूरी बात बता दी।

कृष्ण ने कहा, तुम फिर जाओ और एक बार फिर खाना मांगना।

ग्वाले बोले, वहां जाने का कोई लाभ नहीं है। अगर उन्होंने एक बार में नहीं दिया है तो दूसरी बार जाने पर भी वे लोग खाना नहीं देंगे।

तब कृष्ण ने बाल ग्वालों को समझाया, जीवन में कभी एक बार निराशा हाथ लगे, असफलता मिल जाए तो हमें अपने प्रयासों को रोकना नहीं चाहिए। बार–बार प्रयत्न करना ही योग्य इंसान की निशानी है। हो सकता है कि हर बार असफलता मिले, लेकिन सफलता कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में प्रतीक्षा जरूर कर रही होगी। तुम सभी एक बार फिर वहां जाओ, लेकिन इस बार कुछ अलग करना। इस बार मेरा और बलराम का नाम लेकर खाना मांगना। ग्वाल बाल फिर वहां पहुंच गए। इस बार उन्होंने कृष्ण और बलराम का नाम लेकर खाना मांगा तो उन्हें खाना मिल गया। यहां श्रीकृष्ण ने सीख दी है कि एक बार प्रयास करके थकना नहीं है, रुकना नहीं है। हमें बार–बार तरीके बदलकर काम करते रहना चाहिए। किसी न किसी तरीके से हमें सफलता जरूर मिल जाएगी।

जज्बा और जिंदादिली

हमारी आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं थी कि, मम्मी हमे अच्छे से अच्छे स्कूल में पढ़ा सके। लेकिन फिर भी मम्मी ने हमारे लिये बहुत कुछ किया। लोग सोचते है कि बेटा ही सबकुछ कर सकता है, बेटिया क्यों नहीं कर सकती ? बेटिया भी आगे बढ़ सकती है।

पूजा ने इसी जज्बे और जूनून के साथ नारायण सेवा संस्थान से निःशुल्क 45 दिन का कम्प्युटर कोर्स प्रारम्भ किया। वो कहती हैं मैंने नारायण सेवा संस्थान से कम्प्युटर कोर्स किया। जिसमें बेसिक हिन्दी, इग्लिश टाईपिंग की। उसके बाद मैंने एडवांस कोर्स भी किया जिससे में आज अच्छी जॉब कर रही हूँ और पांच हजार रुपये महीना का कमा लेती हूँ। बेटी हूँ तो मैं अपनी माँ के लिए सबकुछ करूंगी जो बेटा करता है। मैं मेरी मम्मी से वादा करती हूँ कि मैं उन्हें अच्छी से अच्छी कम्प्युटर इंजीनियर बनकर दिखाउंगी। मैं नारायण सेवा का दिल से धन्यवाद करना चाहती हूँ। पूजा की जिंदादिली और जज्बे को सलाम।

संगठन से प्रगति

संगठनात्मक एकता विजय और कार्यसिद्धि का मूल मंत्र है। दिव्य प्रतिभाओं का एकीकरण लोक कल्याणकारक है। संसार के समस्त श्रेष्ठ कार्य एकात्मभाव से ही सिद्ध होते हैं। अतः सबको साथ लेकर चलें। किसी भी कार्य को सफलता के लिए एकजुट होना आवश्यक है। संगठन की ताकत एकता में है। संगठनात्मक एकता समाज एवं देश को उन्नति के शिखर पर पहुंचा देती है। मनुष्य के जीवन में संगठन का बड़ा महत्त्व है। अकेला मनुष्य शक्तिहीन है, जबकि संगठित होने पर उसमें शक्ति आ जाती है। संगठन की शक्ति से मनुष्य बड़े से बड़े कार्य भी आसानी से कर सकता है। संगठन में ही मनुष्य की सभी समस्याओं का हल है। जो परिवार और समाज संगठित होता है, वहां हमेशा खुशियां और शांति बनी रहती है और ऐसा देश तरक्की के नित नए सोपान तय करता है। इसके विपरीत जो परिवार और समाज असंगठित होता है, वहां आए दिन किसी न किसी बात पर झगड़े होते रहते है, जिससे वहां हमेशा अशांति का वातावरण बना रहता है। संगठित परिवार, समाज और देश का कोई भी शत्रु कुछ नहीं बिगाड़ सकता, जबकि असंगठित होने पर शत्रु जब चाहे हावी को सकता है। संगठन का प्रत्येक क्षेत्र में विशेष महत्त्व होता है, जबकि बिखराव किसी भी क्षेत्र में अच्छा नहीं होता है। संगठन का मार्ग ही मनुष्य की विजय की विजय का मार्ग है। यदि मनुष्य किसी गलत उद्देश्य के लिए संगठित हो रहा है, तो ऐसा संगठन अभिशाप है, जबकि किसी अच्छे कार्य के लिए संगठन वरदान साबित होता है। प्रत्येक धर्म ग्रंथ संगठन और एकता का संदेश देते है। कोई भी धर्म आपस में बैर करना नहीं सिखाता।

सभी धर्मो में कहा गया है कि मनुष्य को परस्पर प्रेमपूर्वक वार्तालाप करना चाहिए। मनुष्य जब एकमत होकर कार्य करता है तो संपन्नता और प्रगति को प्राप्त करता है। संगठन में प्रत्येक व्यक्ति का विशेष महत्त्व होता है। इसलिए, जब मनुष्य संगठित होकर कोई कार्य करता है तो उसके परिणाम में विविधता देखने को मिलती है। जिस तरह प्रत्येक फूल अपनी–अपनी विशेषता और विविधता से किसी बगीचे को सुंदर व आकर्षित बना देते है, उसी तरह मनुष्य भी अपनी–अपनी विशेषता और योग्यता से किसी भी कार्य को नया आयाम प्रदान कर सकते हैं।

महिलाओं के हुनर को दिलाई नई पहचान

सीमांत के वे गांव, जहां महिलाओं का बंदिश के बिना बाहर निकलना चलन में नहीं है। ऐसे इलाकों में एक नाम गूंजता है लता बहिन जी...। अपनी उम्र रेगिस्तान को दे चुकी लता कच्छवाह ने न केवल कशीदाकारी के हुनर को दाम दिए है, बल्कि महिलाओं को सुख–दुःख की भागीदारी भी बनी है। जोधपुर में जन्मी लता सामाजिक कार्य की ललक के चलते बाड़मेर आ गई। आज वह 671 स्वयं सहायता समूह के जरिए रोजगार दे रही है।

सेवा का यह काम आपके सहयोग के बिना कैसे होगा सम्भव

NARAYAN HOSPITALS

पशुवत जिन्दगी जी रहे दिव्यांग भाई बहिनों को अपने पांवों पर चलाने के लिए कृपया करें योगदान

ऑपरेशन	सहयोग राशि (रूपये)	ऑपरेशन	सहयोग राशि (रूपये)
501	1700000	40	151000
401	1401000	13	52500
301	1051000	05	21000
201	711000	03	13000
101	361000	01	5000

NARAYAN LIMBS & CALIPERS

रेंग रेंग कर चलने वाले दिव्यांगजनों को सहायक उपकरणों का सहयोग देकर बनाये सशक्त

सहायक उपकरण विवरण	सहयोग राशि (रूपये)
कृत्रिम अंग	10000
ट्राई साईकिल	5000
व्हील चेयर	4000
कॅलिपर	2000
बैसाखी	500

NARAYAN VOCATIONAL ACADEMY

दिव्यांगों को स्वावलम्बी बनाने के लिए संस्थान द्वारा दिये जा रहे प्रशिक्षणों में आपका अनुदान हो

सिलाई/कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सांजन्य राशि	
30 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 225000 रू.	5 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 37500 रू.
20 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 150000 रू.	3 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 22500 रू.
10 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 75000 रू.	1 प्रशिक्षणार्थी हेतु सहयोग - 7500 रू.

दान सहयोग हेतु सम्पर्क करें - 0294-6622222, 7023509999

NARAYAN PARA SPORTS ACADEMY

प्रतिभावान दिव्यांग बन्धुओं को खेल प्रशिक्षण देने तथा खेल अकादमी स्थापित करने के लिए कृपया करें मदद

निर्माण सहयोगी बनें	51000 रू.

NARAYAN ROTI

प्यासे को पानी, भूखे को भोजन, बीमार को दवा, यही है नारायण सेवा- कृपया करें भोजन सेवा

विवरण (प्रतिदिन)	सहयोग राशि (रूपये)
नाश्ता, दोपहर व रात्रि भोजन सहयोग	37000
दोपहर व रात्रि भोजन सहयोग	30000
दोपहर अथवा रात का भोजन सहयोग	15000
केवल नाश्ता सहयोग	7000

वर्ष में एक दिन 151 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन सहयोग

NARAYAN EDUCATION ACADEMY

कृपया विद्या का दान देकर गरीब बच्चों का करें उद्धार

प्रति छात्र शिक्षा सहयोग (प्रति वर्ष)	36000 रू.
प्रति छात्र शिक्षा सहयोग (प्रति माह)	3000 रू.

NARAYAN APNA GHAR

जिनका कोई नहीं है इस दुनिया में..... ऐसे अनाथ बच्चों को ले गोद और उनकी शिक्षा में करें मदद

प्रति बालक (18 वर्ष तक) सहयोग	100000 रू.

NARAYAN COMMUNITY SEVA

दूरस्थ एवं आदिवासी क्षेत्रों में संस्थान की ओर से चलाई जा रही राशन वितरण, वस्त्र एवं पोशाक सेवा में मदद करें

50 मजदूर परिवार	100000 रू.
25 मजदूर परिवार	50000 रू.
5 मजदूर परिवार	10000 रू.
3 मजदूर परिवार	6000 रू.
1 मजदूर परिवार	2000 रू.

कैलाश 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन

समाज में हेय दृष्टी से देखे जाने वाले दिव्यांग बन्धुओं को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए हम कृतसंकल्परत है कृपया सामाजिक सेवा में आप भी हमारे साथ आये।

प्रशांत अग्रवाल
अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष

सम्पादकीय

कुछ लोग भविष्य में जीते हैं, कुछ वर्तमान में और कुछ भूतकाल में। यह लोगों का अपना–अपना स्वभाव है। जो भूत में जीता है वह पुरानी बातों से नई बातों की तुलना करने लगता है। उसे लगता है कि पहले सब कुछ ठीक था, अब सारा मामला गड़बड़ हो गया है। उसे लगता है कि जमाना खराब आ गया है। वह देश, काल, परिस्थितियों में हो रहे परिवर्तनों को नजरअंदाज कर देता है। जो भविष्य में जीता है वह अकारण ही सपने देखने का आदी हो जाता है। वह बिना परिश्रम सुनहरी कल्पनाओं में जीने लगता है। और जो वर्तमान में जीता है वह अति व्यावहारिक हो उठता है। उसकी सोच केवल परिणामवादी बनती चली जाती है।

ये तीनों ही प्रकार की सोच भले ही सही हो पर एकांगी हैं। वस्तुतः मानव अपनी विचारशक्ति के कारण शुद्ध रूप से किसी एक काल में कभी नहीं जी सकता। प्रतिपल वह हर काल में जीता है। सही तो यही है कि भूत से सीख ले, वर्तमान को सुधारे व भविष्य की संकल्पना संजोये तभी सफल जीवन कहा जायेगा।

कुछ काव्यमय

भूत, भविष्य और आज को,
कर सकें समेकित।
तीनों से जीवन में
सीखना अपेक्षित।
इनका मिला–जुला स्वरूप
मानव को निखारेगा।
भीतर का हर कचरा
यह संगम बुहारेगा।

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

नरेन्द्र चल पड़ा

झालावाड़ के रहने वाले नरेन्द्र कुमार मीणा ने एक्सीडेंट में भले ही अपना पांव खो दिया हो लेकिन जिदंगी में आगे बढ़ने का हौसला पूरी तरह कायम है। वे कहते हैं– मैं नरेन्द्र कुमार मीणा हूँ मैं झालावाड़ राजस्थान का रहने वाला हूँ। मैं दोस्त के साथ कहीं जा रहा था दुर्घटना में अचानक डिवाईडर से टकराने के कारण मेरा पैर कट गया।

मैंने टी. वी में नारायण सेवा संस्थान का नाम सुना था। मैं मेरे भाई के साथ यहां आया। आज यहां पर नारायण सेवा संस्थान में मेरा पैर लगाया गया है। इससे अब मैं अपने घर का खर्चा चला सकता हूं और खुद का खर्चा भी चला सकता हूं। और अपने परिवार का पालन– पोषण कर सकता हूं। संस्थान ने नरेन्द्र को निःशुल्क पाँव लगाकर उसकी जिंदगी को एक नयी दिशा दी है। अपनी नई जिदंगी के लिये वो संस्थान को बहुत–बहुत धन्यवाद देता है। ये दुनिया का ऐसा पहला संस्थान है, जहां बिल्कुल फ्री इलाज होता है। ऐसा संस्थान मैंने कही और नहीं देखा। नारायण सेवा संस्थान का दिल से बहुत–बहुत धन्यवाद।

अपनों से अपनी बात

अवसर तलाशें, काम करें

भगवान बुद्ध उन दिनों अपरिग्रह में लोक शिक्षण कर रहे थे। अपव्यय और संग्रह की सर्पकुण्डली से लक्ष्मी को निकालने के लिए यह उपदेश समय की दुहरी आवश्यकता पूरी कर रहे थे। बहुतों ने अपना संग्रह परमार्थ के लिए बुद्ध विहारों को दान कर दिया।

परन्तु एक धनाढ्य व्यक्ति अर्थवसु पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उसने अपने संग्रह से कानी–कोड़ी भी दान नहीं की। एक धनाढ्य की, यह कृपणता जन–जन की चर्चा का विषय बन गई। अपने बच्चों के लिए भी वह धन खर्च न करता था। बच्चे भी दुःखी रहते, पर अर्थवसु मौन रहता। सभी को उसका यह

व्यवहार अटपटा लगता।

बहुत दिन बीत गये। नालन्दा विश्व–विद्यालय की नींव रखी गयी। निर्धनों को सुविधा प्रदान करना तात्कालिक श्रेय था परन्तु ज्ञान आलोक के अभाव में दरिद्रता से छुटकारा कैसे मिलेगा? अर्थवसु कुछ ऐसा ही सोच रहे थे। जो संग्रह उन्होंने किसी को नहीं सौंपा आज उसके उपयोग का अवसर आया था। एक दिन लोगों ने सुना कि उन्होंने अपनी सारी सम्पदा दान कर दी।

तथागत बुद्ध इस आकस्मिक निर्णय पर चकित हुए। जब उन्होंने अर्थवसु को इस निर्णय के बारे में पूछा तो उन्होंने एक ही उत्तर दिया। सर्वोत्तम कार्य के निष्पादन के लिए ही मैं कृपणता अपनाते रहा। मैं निष्ठुर नहीं था– उपयुक्त अवसर ही तलाश में था।

कहीं हम भी इसी तरह "एक अच्छे अवसर का तो नहीं तलाश रहे हैं।" आइये एक अच्छा अवसर आप का इन्तजार कर रहा है। ऐसा न हो कि हमें फिर अवसर न मिले।

– कैलाश 'मानव'

जीवन है कर्म प्रधान

एक राजा का बहुत चाटुकार ज्योतिषी था। वही राजा को बताता था कि कौन–सा काम कब करना है, कौन–सा पैर आगे बढ़ाना है? किस समय किस तरह हाथों को हिलाना है? इस तरह राजा के समस्त निर्णय वास्तव में वह ज्योतिषी ही करवाता था।

उस राज्य के समस्त लोग दुःखी थे कि यह राजा तो इस ज्योतिषी के चक्कर में पागल हो गया है। वह ज्योतिषी नाना प्रकार के यत्न करके राजा को अपने जाल में फँसा चुका था। एक बार राजा और ज्योतिषी एक साथ कहीं जा रहे थे। बीच रास्ते में उन्हें हल लेकर जाता हुआ एक किसान दिखाई दिया। ज्योतिषी ने मन ही मन राजा को और अधिक प्रभावित करने के बारे में सोचा। ज्योतिषी ने किसान से पूछा– तू कहाँ जा रहा है?

किसान ने एक तरफ इशारा करते हुए उत्तर दिया–इस तरफ मेरा खेत है और मैं अपने खेत पर काम करने जा रहा हूँ।

ज्योतिषी ने टोकते हुए कहा–इस दिशा में मत जा, इस दिशा में तो दिशाशूल है। इस दिशा में तेरा अन्त निश्चित है। ज्योतिषी की बात सुनकर किसान ने गंभीरतापूर्वक उत्तर दिया–महाराज जी, रहने दीजिए। इस दिशा में मेरा खेत है और उसी से मेरा परिवार चलता है और उसी खेत की वजह से आज हम सुखी हैं।

किसान की बात सुनकर ज्योतिषी सकुचा गया और मन में सोचा कि इससे तो राजा के मन में मेरा प्रभाव कम हो जायेगा। ज्योतिषी ने किसान से कहा– अरे! कुछ तो गड़बड़ है। मेरे ज्योतिष शास्त्र के अनुसार तुम्हारे साथ कुछ अनर्थ होने वाला है। मुझे तुम्हारे हाथ दिखाओ। इस पर किसान ने अपने हाथ उल्टे करके ज्योतिषी को दिखाये।

ज्योतिषी ने कहा–अरे भाई! पागल हो क्या? किसी ज्योतिषी को ऐसे हाथ दिखाते हो? अपने हाथों को सीधा तो करो, ताकि मैं तुम्हारी हस्तरेखाएँ पढ़ पाऊँ।

किसान ने उत्तर दिया–मैं किसी के सामने हाथ नहीं फैलाता हूँ। इन हाथों में तो मेरी ताकत है कि इनसे मैं अपनी जिन्दगी और अपने परिवार को चलाता हूँ।

मुझे किसी भी ज्योतिषी को अपने हाथ दिखाने की आवश्यकता नहीं है। इस घटना से राजा के ऊपर ज्योतिषी का जो भूत सवार था, वह उतर गया और राजा ने मन ही मन सोचा कि एक छोटा–सा किसान इतने बड़ ज्योतिषी के सामने हाथ फैलाने को तैयार नहीं है, तो मैं क्यों हर समय इस ज्योतिषी से सलाह–मशविरा लिया करता हूँ? जब कि मैं तो एक सक्षम व्यक्ति और राज्य का राजा हूँ।

इस प्रकार व्यक्ति को भाग्य के सहारे ही नहीं बैठे रहना चाहिए, अपितु अपनी मेहनत से कर्म करना चाहिए और इसी से उसका भाग्य बदल सकता है। हाथ पर हाथ रख कर बैठे रहने से या किसी अन्य व्यक्ति के भरोसे पर हम अपने लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर सकते। हमें अपनी लगन और मेहनत से प्रयास करने पर ही लक्ष्य की प्राप्ति होगी।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

कैलाश की आंखें नम हो उठी, उसके बस में होता तो वह तुरन्त रकम का इन्तजाम कर गौहाटी भेज देता मगर वह भी लाचार था। उसने यह बात फोन पर बताई तो उस व्यक्ति ने यही कहा कि– आपका ब्रह्माण्ड में बहुत विश्वास है, आप ब्रह्माण्ड से प्रार्थना करें की मेरी दोनों पोतियां सकुशल घर लौट आये। फिरौती के पैसे उसके पास थे नहीं, पुलिस के पास जाओ तो बच्चियों की जान को खतरा था, इसलिये दुआएं ही एकमात्र रास्ता था।

कैलाश ने भी बच्चियों के सकुशल लौटने हेतु समाधिस्थ हो ब्रह्माण्ड से प्रार्थना की। गौहाटी में उस परिवार का एक–एक दिन रोते रोते गुजर रहा था। आतंकवादियों की धमकी के फोन बराबर आते रहे, वह यही कहता रहा कि उसके पास पैसा होता तो कभी का अपनी बच्चियों को छुड़ा चुका होता। 15 दिन इसी तरह कठिनाइयों में निकले। 16 वें दिन, जब आतंकवादियों का लग गया कि उन्होंने गलत अपहरण कर लिया है, बच्चियों के घरवालों की हैसियत उतनी नहीं है, जितनी वे समझ रहे थे उन्होंने बच्चियों को छोड़ दिया। कैलाश को जब यह समाचार मिला तो उसे ब्रह्माण्ड पर और विश्वास हो गया।

अंश-200

फल–सब्जियां साथ तो नहीं रख रहे आप?

बाजार से फल और सब्जियां लाकर एक–साथ डलिया या फ्रिज में रख देते हैं। पर क्या आप जानते हैं कि कुछ फल और सब्जियां साथ रखने से खराब हो जाती हैं। इन्हें कैसे रखना है आइए जानते हैं.....

1. खीरा अलग रखें

इसे किसी फल या सब्जी के साथ न रखते हुए अलग रखें। खासतौर पर तरबूज, केला या टमाटर के साथ नहीं रखें तो बेहतर है। फल एथिलीन गैस छोड़ते है जिससे खीरा जल्दी खराब हो जाता है। अगर फ्रिज में भी रख रहे हैं तो खीरा इनसे अलग रखें।

2. सेब और संतरा

इन्हें एक–साथ रखने के बजाय सेब को फ्रिज में रखें। वहीं संतरे को खुले में रखें। संतरा मैश बैग में रखें ताकि इससे हवा आर–पार होती रहे। मैश बैग कपड़े की जाली से बना हुआ होता है।

3. आलू और प्याज

अमूमन घरों में आलू और प्याज एक ही डलिया में रख देते हैं। प्याज आलू को जल्दी खराब कर देता हैं ऐसे में इन्हें खुला तो रखें पर अलग–अलग रखें। आलू कागज के बैग में रख सकते हैं इससे ये लंबे समय तक सुरक्षित रहेंगे। प्याज के साथ लहसुन रख सकते हैं।

4. टमाटर खुला रखें

फ्रिज में टमाटर बेस्वाद हो जाते हैं। इन्हें डलिया में रखकर खुला रखें। उपयोग किया हुआ आधा टमाटर भी फ्रिज में नहीं रखें। कोई भी फल या सब्जी फ्रिज में खुली रखने पर इनमें बैक्टीरिया पनप जाते हैं, जो सेहत को नुकसान पहुंचा सकते हैं।

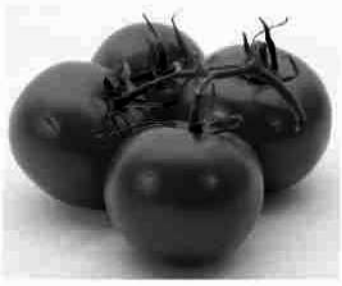

5. कद्दू और सेब

अगर सेब और कद्दू एक साथ रखते हैं तो इन्हें अलग–अलग रखें। सेब से कद्दू जल्दी खराब हो जाता है। कद्दू को हमेशा कमरे के सामान्य तापमान से ठंडे स्थान पर रखें पर फ्रिज जितना ठंडा भी नहीं। हालांकि कद्दू हमेशा कम मात्रा में ही खरीदना चाहिए।

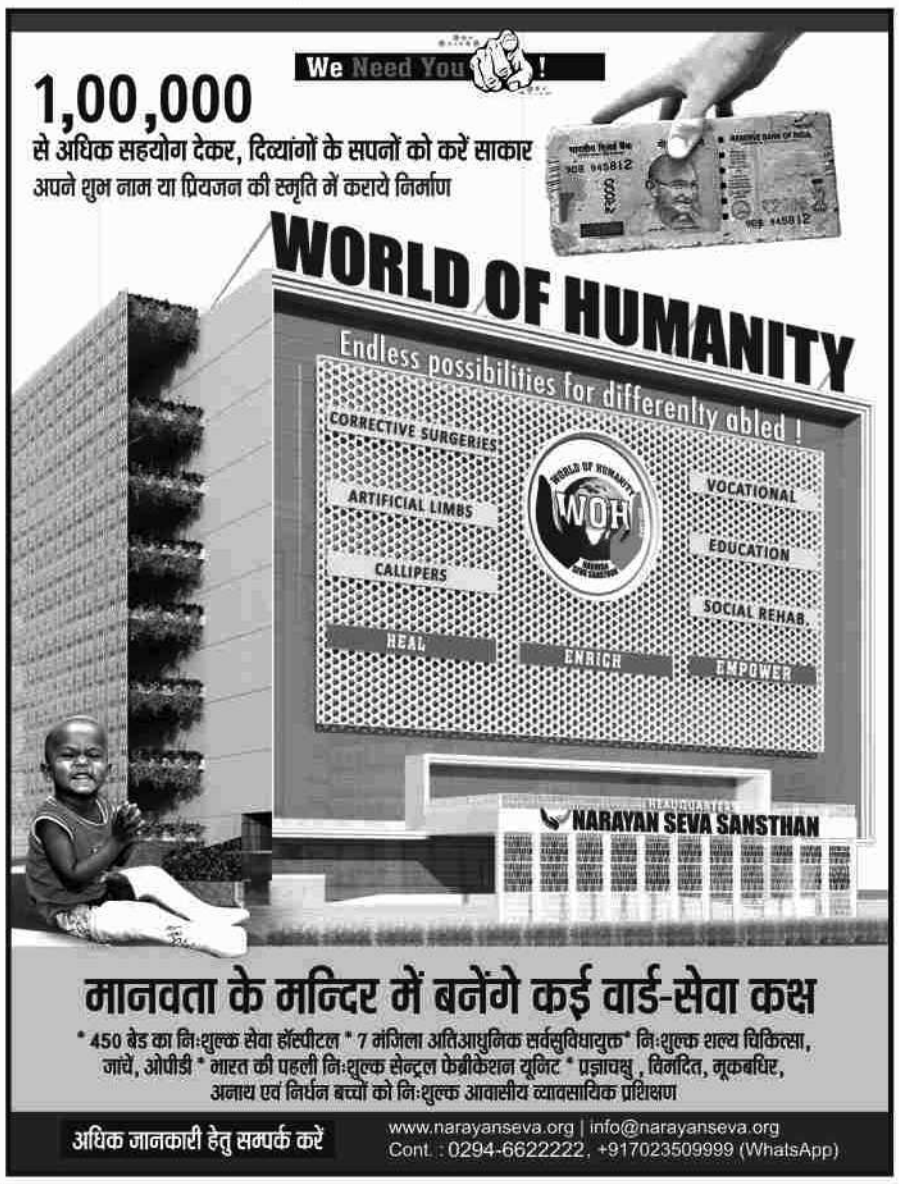

अनुभव अमृतम्

भक्तिवान तानाजी अपने बेटे का विवाह करने जा रहे थे। घुड़सवार आदमी ने पत्र दिया, शिवाजी महाराज का, छत्रपति शिवाजी महाराज का पत्र पढ़ा और कहा मेरे बेटे का विवाह आप करा देना। मेरे आका, मेरे सम्राट, छत्रपति शिवाजी ने जो भारतीय संस्कृति की रक्षा करने के लिए प्रकट हुए हैं। उनका आदेश आया है। दुर्ग जीतना है, गढ़ जीतना है, तुरन्त आये और अपने सैनिकों को एकत्रित किया। ऊँचा किला औरंगजेब के सिपाही अन्दर रहते थे। ऊँचा किला एक गो को लिया। गो एक प्राणी होता, थलचर उसके पैर इतने नुकीले होते हैं? इतने सुदृढ़ होते है कि अपने पैरों से दीवार पर तुरन्त खोदकर अपने पंजे दीवार पर गढ़ा लेता और इतना तेजी से गढ़ा लेता है कि वो दीवार पर चिपक गया, मजबूती से चिपक गया, और रस्सी डाली गो के ऊपर और रस्सी का सहारा मिल गया। रस्सी ऊपर डाल के चढ़ते, और ऊपर कोई व्यक्ति थोड़ी है। ऊपर तो औरंगजेब के सिपाही रहते हैं। गो की वजह से रस्सी अटक गई ऊपर और तानाजी भी ऊपर चढ़ गये। अपने सैनिकों को चढ़ाया। किला जीत लिया। परन्तु जीतने के तुरन्त बाद में पीछे से किसी ने वार किया, आक्रमण किया तानाजी अमर हो गये। कितने ही लोग चले गये। अपने चार पीढ़ी पहले, पांच पीढ़ी पहले, छः पीढ़ी पहले। छः पीढ़ी का नाम भी अब याद नहीं है।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 80 (कैलाश 'मानव')

संस्थान है वरदान

मेरा नाम विपिन है मेरी उम्र 9 वर्ष है मैं बरेली उत्तरप्रदेश का निवासी हूँ मेरे पिता श्री नेम चन्द जी किसान है मैं जन्म से ही विकलांग हूँ मेरे पिताजी ने बरेली के अस्पताल में मेरा ईलाज करवाया लेकिन मैं ठीक नहीं हुआ। टी.वी. के आस्था चैनल को देखकर पता चला कि नारायण सेवा संस्थान में विकलांगों को निःशुल्क चिकित्सा सेवाएं दी जाती है।

मेरे पिता और मैं उदयपुर संस्थान में आये। मेरा सफल ऑपरेशन हो गया। मुझे खुशी है कि मैं भी अपने पैरों पर अब खड़ा हो पाऊंगा। आज विकलांग और असहाय लोगों के लिये यह संस्थान वरदान बन गई है।

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पैन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है
www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com
: kailashmanav

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023